श्री राम चंद्र मिशन
केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES
INDIA

जनवरी २०१३ खंड ६, अंक १

नव वर्ष की शुभकामनाएँ

एक कठिन तनाव का वर्ष

बीते हुए वर्ष २०१२ में हमने गुरुदेव के जीवन को संकट में डाल देने वाली बीमारी से गुज़रते हुए देखा। जुलाई में तिरुप्पुर में अपने जन्म–दिवस उत्सव में वे अपनी गम्भीर बीमारी के कारण सम्मिलित नहीं हो सके। उन्होंने १५ अगस्त को मणपाक्कम में एक विशेष भंडारा बुलाया और अध्यक्ष पद से अपने त्यागपत्र की घोषणा की। लगभग बीस हज़ार अभ्यासियों की उपस्थिति में, जो इतने कम समय में वहाँ एकत्रित हुए थे, गुरुदेव ने अपना निर्णय बदलकर भाई कमलेश पटेल को उपाध्यक्ष नियुक्त किया जिससे कि वे प्रशासनिक प्रबन्धन का कार्यभार संभाल सके। तब से उनके स्वास्थ्य में धीरे–धीरे सुधार आरम्भ हुआ।

पिछले तीन महीनों में गुरुदेव के स्वास्थ्य में निश्चित रुप से सुधार हुआ है। धीरे–धीरे हमने उनका ऑक्सीजन सिलेन्डर का हटना और पहियेदार कुर्सी का छोड़ना देखा। अब गुरुदेव अपनी छड़ी और एक सहायक की कलाई थाम कर ध्यान–कक्ष में आते हैं और गुरुओं की तस्वीरों को माला पहनाते हैं। वे अपनी कार में यात्रा करते हैं और आश्रम में गोल्फ–कार्ट का उपयोग करते हैं। यहाँ तक कि उन्होंने भारत में दोबारा यात्रा करने के बारे में बात करना आरम्भ कर दिया है। इस बीच अभ्यासियों के समूह लगातार मणपाक्कम आश्रम में आ रहे हैं और गुरुदेव उनको अनिवार्य रुप से सत्संग कराते हैं। वे प्रबन्धन कार्य और ईमेल पत्राचार के लिए भी पर्याप्त समय और ऊर्जा दे रहे हैं।

'गायत्री' जाने के बाद गुरुदेव के स्वास्थ्य में तीव्र गति से सुधार हुआ। सत्संग कराने के लिए आश्रम में उनके आकस्मिक आगमन से सारे अभ्यासी चकित रह जाते हैं। उनके भोजन की मात्रा में भी सुधार हुआ है और उनके चेहरे पर पीड़ा के चिन्ह नहीं हैं, यद्दपि वे शीघ्र थक जाते हैं।

कुछ दिन पहले भाई माधव के घर पर एक अभ्यासी ने गुरुदेव से कहा, "मालिक अब से आपको कोई पीड़ा नहीं होनी चाहिए। आपने बहुत कष्ट सहा है।" गुरुदेव के चेहरे पर चमक आ गई और उन्होंने अपना दायाँ हाथ बाहर खींचा और बोले, "तथास्तु" (ऐसा ही हो)। हम आशा और प्रार्थना करते हैं कि नववर्ष गुरुदेव के जीवन में बसन्त के मौसम जैसा हो और उनको अच्छा स्वास्थ्य और प्रसन्नता मिले।

गायत्री में गुरुदेव ने नववर्ष का आरम्भ शीघ्र तैयार होकर परिवारजनों और वहाँ उपस्थित अभ्यासियों को शुभकामनाएं देने के साथ किया। गुरुदेव ने प्रत्येक कार्य शीघ्रता से किया क्योंकि वे आश्रम जाकर अपने अभ्यासियों से मिलने के लिए उत्सुक थे। गुरुदेव समय से पहले ही आश्रम पहुँच गए। आश्रम में लगभग ७५०० अभ्यासी थे। जैसे ही गुरुदेव ने आश्रम में प्रवेश किया, एक लम्बी पंक्ति में खड़े हुए अभ्यासियों और बच्चों ने उनका अभिवादन किया और गुरुदेव ने सत्संग कराया, जो पूरे एक घंटे तक चला। सत्संग के बाद गुरुदेव ने 'पूर्वाग्रह' विषय के बारे में एक वार्ता दी, जिसका अर्थ है"पूर्व–आंकलन"। पूर्वाग्रह उत्पन्न होता है क्योंकि हम दूसरों का आंकलन करते हैं, लेकिन वह भी पूर्वाग्रह ही है जब हम स्वंय का आंकलन करते हैं,"क्योंकि जब मैं स्वंय का आंकलन करता हूँ, तब मैं उस निर्णय के लिए स्वंय की निंदा करता हूँ।" उन्होंने कहा,"प्रसन्नता मानव जीवन का लक्ष्य नहीं है, मानव जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक विकास है।"

वार्ता के बाद गुरुदेव सभा भवन खंड में गए। यद्दपि वे थके हुए थे फिर भी वे उपहार लेते और देते हुए, मिशन के मामलों पर चर्चा करते हुए और बच्चों के नाम रखते हुए अनेक अभ्यासियों से मिले। गुरुदेव ने अपना दोपहर का भोजन आश्रम में किया और लगभग १ बजे वे गायत्री वापस चले गए। शाम के समय वे दोबारा फ्रांस और स्विज़रलैंड के अभ्यासियों के एक समूह से मिले जो उसी रात वापस लौट रहे थे। गुरुदेव ने अपनी सभी यूरोप यात्राओं के बारे में बातें करना शुरु कर दिया।

गुरुदेव बता रहे थे,"बाबूजी अज्ञानता के बाद ज्ञान और उसके बाद फिर अज्ञानता के बारे में बताते हैं। इन दोनो अज्ञानताओं में क्या भिन्नता है? अज्ञानता का पहला क्रम वह है जब आप कुछ नहीं जानते और दूसरा क्रम वह है जब आप सब कुछ जानते हैं और फिर भी कुछ नहीं जानते। ज्ञान अनन्त है। आप ज्ञान पर सम्पूर्णता नहीं पा सकते।"

अक्टूबर २०१२

अक्टूबर के पहले कुछ हफ़्तों में गुरुदेव की सेहत में सुधार आ रहा था और उनकी दिनचर्या में शामिल था शारीरिक व्यायाम चिकित्सा, आराम और नाश्ता। आम तौर पर जब वे नाश्ता कर रहे होते, तो उनको अखबार पढ़कर सुनाया जाता। उसके पश्चात गुरुदेव अपना ईमेल का कार्य शुरू करते।

शुक्रवार १२ अक्टूबर को, सुबह नौ बजे के सत्संग के बाद, गुरुदेव डॉर्म 'ए' में पुणे के अभ्यासियों से मिलने आए। उन्होंने पहले एक वार्ता और फ़िर सबको एक सिटिंग दी। शनिवार १३ अक्टूबर को कॉटेज का पुर्न–निर्माण कार्य शुरू हुआ। कॉटेज को तोड़ा गया और पुर्न–निर्माण का कार्य ज़ारी है।

एक बार खाने के बाद, गुरुदेव करीब एक घंटे तक बात कर रहे थे। फ्रांस से करीब १५ अभ्यासी उनसे मिलने आए थे। पुराने दिनों से गुरुदेव को एक अभ्यासी याद थी और उनका नाम लेने पर वह बहन भावुक हो उठीं। गुरुदेव ने कहा, "जब हम प्यार करतें है तो याद भी रखते है"। याद को कई भौतिक पहलू भी प्रभावित करते हैं – हमें खुशबू, कुछ जो देखा या सुना था इत्यादी याद रहता है और यह सब यादें उन क्षणों को वर्तमान में ले आती हैं।

रविवार १४ अक्टूबर का दिन एक असाधारण दिन था क्योंकि उस दिन गुरुदेव लगभग करीब तीन महिने से अधिक समय के पश्चात रविवार का सत्संग कराने के लिए ध्यान कक्ष में आए थेऔर सत्संग एक घंटे तक चला। उसके बाद वे भाई माधव के घर वापस चले गए तथा घर के बाहर ही बैठ गए और भाई संस्कृत कन्नन ने अपनी प्रत्येक रविवार की दिनचर्या के अनुसार भगवद् गीता का एक अध्याय उसके श्लोकों और उनके भावार्थ के साथ पढ़ा।

शनिवार २० अक्टूबर गुरुदेव के स्वास्थ सुधार में एक और महत्वपूर्ण दिन था क्योंकि वे सिर्फ़ छड़ी और एक व्यक्ति की सहायता से चलकर आए। गुरुदेव ईरान से आयीं अभ्यासी बहनों के एक समूह से मिले। वे उनसे और अन्य अभ्यासियों से, जो हॉल में उनके चारों ओर एकत्रित हो गए थे, काफ़ी देर तक बातें करते रहे। उनके कार्य को हर किसी में एक सूक्ष्म और गहरे स्तर पर पर होते हुए महसूस किया।

गुरुदेव ने कहा कि आध्यात्मिक कार्य में ना तो शुरुआत है और ना ही अंत। कार्य हमेशा से होता आ रहा है और आगे भी होता रहेगा और वर्तमान में करने के लिए बहुत काम है। यह सोचना अहंकार होगा कि अब तक कुछ कार्य नहीं हुआ है। हमारा वर्तमान कार्य सिर्फ़ हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए कार्यों के आगे का कार्य है। हमें सावधान रहना चाहिए और अपने अहम को यह सोचने का अवसर नहीं देना चाहिए कि अब तक कुछ अधिक नहींहुआ है। इसके बजाय हमें प्यार और विनम्रता से कार्य करते रहना चाहिए।

एक शाम को गुरुदेव का स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था इसलिए वे बाहर नहीं आए लेकिन फ़िर भी वे 'ओमेगा' के कुछ बच्चों से मिले जिन्होंने वाद–विवाद प्रतियोगिता में दूसरा पुरुस्कार जीता था। गुरुदेव उन बच्चों से मिलकर खुश थे उन्होंने उनकी बातें सुनी और अपने अनुभवों को उन्हें सुनाया।

भाई. ए.पी. दुरई गुरुदेव से मिलने आए और तमिलनाडू के कई केन्द्रों के अपने भ्रमण के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अब जो विकास दिख रहा है वह हमारे प्रिय गुरुदेव के अथक प्रयासों और यात्राओं के कारण है। उन्होंने कितने ही शहरों और केंद्रों का दौरा किया है। गुरुदेव ने कहा कि जब कोई ३०–४० साल की आयु के बीच में हो तो भ्रमण करने के लिए और काम पूरी निपुणता से करने के लिए वही सबसे अच्छा समय है क्योंकि जैसे–जैसे हमारी उम्र बढ़ती है तो शारीरिक थकान ऐसे भ्रमण के लिए एक बाधा बन जाती है।

एक दिन गुरुदेव आश्रम के भ्रमण के लिए निकले। इस दौरान वे कॉटेज में वहां का पुर्न–निर्माण कार्य, ध्यान कक्ष में वहां हो रहा कार्य देखने गए और उसके बाद वे डॉर्म 'ए' में एक वार्ता और सिटिंग देने के लिए गए।

इस भ्रमण के दौरान उन्होंने कैन्टीन तथा अन्य कई जगहों पर अभ्यासियों के साथ समय बिताया। यह लंबा भ्रमण गुरुदेव के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हुआ। वे बहुत थके हुए थे और दिन के बाकी समय दर्द में रहे। शाम को उन्हें ठीक नहीं लग रहा था और चिकित्सकों द्वारा कुछ निरीक्षण करने पर खुलासा हुआ कि यह सिर्फ़ दबाव और थकान का परिणाम था।

अक्टूबर के अंत में गुरुदेव को थोड़ा बुखार हुआ था। वह हर रोज़ शाम के समय बिस्तर पर थे सॅलाइन ड्रिप्स के साथ और पीठ पर सहारा लेकर बैठ पाते थे। वे ज़्यादा बात नहीं कर रहे थे और काफ़ी कमजोर लग रहे थे। गुरुदेव ने कहा, "मुझे कुछ खाने का मन नहीं करता पर ये लोग मुझे खिला देते हैं और ध्यान रखते हैं कि मैं खा–पी रहा हूँ।"

बैंगलोर सेमिनार के दौरान, भाई कमलेश ने गुरुदेव को बताया कि शाम का सत्संग असाधारण और विशिष्ट था। गुरुदेव ने कहा कि यह पूर्व तैयारी के कारण हुआ होगा। इस बात का बैंगलोर से आए एक प्रशिक्षक ने अनुमोदन किया और बताया कि सभी अभ्यासियों ने वहां आने से पहले व्यक्तिगत सिटिंग लीं थी। गुरुदेव ने कहा, "हाँ, यह शुद्धिकरण कि वजह से है।" यह ज़रूरी है कि हम सभी जो मणपाक्कम आश्रम में गुरुदेव से मिलने आते हैं वे आने से पहले व्यक्तिगत सिटिंग लेकर आए ताकि हम गुरुदेव के प्यार का तोहफ़ा प्राप्त सकें जिसे वह हर समय हम पर बरसाने के लिए तैयार है।

नवंबर २०१२

गुरुदेव का स्वास्थ्य काफ़ी खराब रहा और एंटीबायोटिक दवाईयों के दिए जाने के कारण वे अधिकांश समय काफ़ी कमजोर और निढाल से रहे। बिपैप (BiPAP)यंत्र के बिना वे सामान्य रूप से सांस नहीं ले पा रहे थे। लेकिन फ़ेफ़ड़ों में एकत्रित तरल पदार्थ को साफ करने के पश्चात उनकी स्थिति में काफ़ी सुधार हुआ। आन्तरिक संक्रमण की संभावना को नकारने के लिए एक सी.टी.स्कैन भी किया गया।

दीवाली के कुछ दिन पहले भाई भास्करन विशेष तौर पर बनायी गई मिठाईयां लेकर आए। गुरुदेव ने निर्देश दिए जैसे कि कैसे इसे करना है और बनाते समय हाथ गीले नहीं होने चाहिए क्योंकि उससे मिठाई शीघ्र ही खराब हो जाती है इत्यादि। हर कार्य की बारीकियों की ओर उनका ध्यान और जो भी कार्य वे करते है उसमें सम्पूर्णता त्रुटिहीन है।

शुक्रवार ९ नवंबर को भाई कमलेश द्वारा कई विवाह सम्पन्न कराए गए और उसके पश्चात नवविवाहित जोड़े गुरुदेव से मिलने आए और उन्होंने उन सभी को सिटिंग दी। शाम को शारीरिक व्यायाम के सत्र के बाद गुरुदेव चलकर बाहर आए और कक्ष में बैठे। जैसे ही कुछ अभ्यासी उनके इर्द–गिर्द इक्ट्ठे हुए गुरुदेव ने अपनी आँखे बंद कर ली और ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि उन्होंने सिटिंग देना आरम्भ कर दिया है। ३० मिनट के बाद उन्होंने आँखे खोली और सबको शुभ–रात्रि बोलकर अंदर वापस चले गए।

हाल ही में यह उनकी प्रत्येक शाम की दिनचर्या बन गई है कि वे आकर कक्ष में बैठते हैं और जैसे ही अभ्यासी उनके आस–पास एकत्रित होकर बैठते हैं गुरुदेव आँखे बंद कर लेते है। कई बार ऐसा भी हुआ कि उन्होंने "ध्यान शुरू करो" भी नहीं कहा पर सिर्फ़ अंत में "दैट्स ऑल" कहा। एक शाम को जब गुरुदेव अपने कमरे में चले गए तो नागपुर से आए कुछ बच्चे जो दो दिन से गुरुदेव से मिलने कि कोशिश कर रहे थे अंदर आए। उनमे से एक ने कहा, "गुरुदेव आप जल्दी ही ठीक हो जाइए, हम आपसे प्यार करते हैं"। और गुरुदेव ने जवाब दिया, "हाँ मुझे पता है, इसीलिए तो मैं जी रहा हूँ," यह कहते हुए गुरुदेव के चेहरे की चमक को देखा जा सकता था।

रविवार ११ नवंबर को गुरुदेव अपनी मोटर व्हीलचेयर में उसे स्वयं चलाते हुए, मोड़ पर आसानी से घुमाते हुए और मंच पर आसानी से चढ़ाते हुए आए। जैसे ही गुरुदेव कक्ष में आए, सभी अभ्यासियों ने तालियों के साथ हृदय में प्रसन्नता और प्यार लिए अपने प्रिय गुरुदेव का स्वागत किया। गुरुदेव ने सत्संग कराया जो एक घंटा एवं पाँच मिनट तक चला।

दिवाली के दिन गुरुदेव ने अस्वस्थ होने के बावज़ूद भी सत्संग कराया। वह सिर्फ़ आत्म–बल के आधार पर था, जो उन्होंने उपयोग किया और जिससे वे बाहर आ सके और आए हुए अभ्यासियों से मिले। गुरुदेव लगातार बड़ी संख्या में उन्हें अभिवादन करने आए अभ्यासियों से मिलते रहे। वे पाँच मिनिट में पचास से ज़्यादा अभ्यासियों से मिले और फ़िर कहा, "मैं थक गया हूँ, मुझे आराम करना है, और कोई आगन्तुक नहीं।" दोपहर में अपने शयन कक्ष में वे फ़िर से अभ्यासियों के एक समूह से मिले।

गुरुदेव ने दक्षिण पूर्व एशिया के केन्द्रों से आए लगभग तीस प्रशिक्षकों से मुलाकात की। गुरुदेव ने उन्हें एक सिटिंग दी और प्रशिक्षकों के कार्य एवं सामान्य कार्य के सम्बन्ध में एक प्रभावशाली वार्ता दी। गुरुदेव ने कैसे हर किसी को अपने कार्य को गम्भीरता से लेने के बारे में बात

की और कहा कि यदि हम कार्य की गहराई में जाते हैं तो कार्य खुलता जाता है इस प्रकार उस कार्य से जो कुछ हम सीखते है और लाभान्वित होते है उसे देख कर कोई भी आश्चर्य चकित हो जाएगा। सिटिंगके आरम्भ एवं समापन के सम्बन्ध में गुरुदेव ने कहा, "कार्य को केवल आरम्भ किया जा सकता है। उस का समापन उनके (बाबूजी) हाथ में है"।

एक रात चलचित्र देखने के बाद गुरुदेव ने दही एवं चावल से बना दक्षिण भारतीय व्यंजन "मोर–कली" खाया। गुरुदेव ने इसे प्रत्येक को वितरित किया और कहा, "यह मेरे स्वास्थ्य लाभ का सूचक है"। जैसे ही गुरुदेव के स्वास्थ्य में सुधार हुआ वैसे ही भाई संस्कृत कन्नन की रविवार को गीता व्याख्यान की दिनचर्या पुन: आरम्भ हो गयी। महीने के अंत तक गुरुदेव की गतिशीलता में वृद्धि होती गयी। वह नियमित रुप से बाहर आकर धूप में बैठने लगे और अधिक से अधिक अभ्यासियों से मिलने लगे। एक चर्चा में गुरुदेव ध्यान कक्ष के रुपान्तर हेतू दिए गए विभिन्न प्रस्तावों के चित्रों को देख रहे थे। वह प्रत्येक से राय लेने के लिए बहुत सतर्क थे और उन्होंने कहा, "हम यहाँ विचार विमर्श कर रहें हैं"। अंत में प्रत्येक की राय जानकर उन्होंने कार्य को आगे बढ़ाने के सम्बन्ध में दिशा निर्देश दिए।

एक अन्य घटना ने भी गुरुदेव के स्वास्थ्य लाभ को प्रकट किया जबकि वे छड़ी (वाकिंग स्टिक) के साथ चलते हुए बाहर आए। शारीरिक व्यायाम चिकित्सक ने कहा, "गुरुदेव,आज आपने मेरा दिन अच्छा बना दिया"। और गुरुदेव ने प्रत्युत्तर दिया, "यह आपके प्रयासों की वजह से संभव हुआ है। धन्यवाद।"

दिसम्बर २०१२

दिसम्बर माह में गुरुदेव के स्वास्थ्य में और अधिक सुधार हुआ। वह एक रविवार को गोल्फ कार्ट से ध्यान कक्ष में आए और पैदल चलकर ध्यान कक्ष में मंच तक आए। यह लम्बी बीमारी के बाद पहली बार था कि वह इस तरह ध्यान कक्ष में आए। प्रथम सप्ताह में लगातार बारिश हो रही थी एवं गुरुदेव कार में जाना चाहते थे इसलिए साँयकालीन शारीरिक व्यायाम सत्र के लिए गुरुदेव अपने कक्ष से चलकर प्रवेश द्वार तक आए एवं कार में बैठकर एक संक्षिप्त भ्रमण के लिए बाहर गए। यह इस बात का द्योतक था कि गुरुदेव शारीरिक रुप से बेहतर थे।

एक शाम गुरुदेव ने "दि रिवीलेशन ऑफ़ दि पिरामिड्स" नामक डाक्यूमेन्टरी देखी। यह एक बहुत ज्ञानवर्धक प्रोग्राम था जिसने महत्वपूर्ण पिरामिडों एवं बहुत से एतिहासिक निर्माणों के बारें में जानकारी दी। काफी चर्चा हुई एवं गुरुदेव 'परिवर्तन कैसे महत्वपूर्ण है' और ब्रह्माण्डीय कार्यों आदि के बारे में बता रहे थे। जब एक व्यक्ति ने पूछा कि यदि प्राकृतिक आपदा आती है तो हमें क्या करना चाहिए। गुरुदेव ने कहा, "उस समय सबसे अच्छा उपाय ध्यान करना है, ताकि यदि कोई आपदा आती है तो हम उसका सामना करने के लिए तैयार होंगे।'

कुछ अभ्यासी प्रशिक्षक बनने के लिए आए थे एवं गुरुदेव से उनका परिचय कराया गया और गुरुदेव ने मज़ाक में कहा, "अब जबकि मैं ठीक हूँ, मुझे यह कार्य वापस लेना है"। जब से गुरुदेव बीमार हुए हैं, भाई कमलेश प्रशिक्षक बनाते रहे हैं।

गायत्री वापसी

साढ़े पाँच महीने बाद गुरुदेव गायत्री वापस गए। घर लोटने के बाद उन्होनें अपनी दिनचर्या जैसे कि सिटिंग्स देना, प्रशासनिक कार्य, आगन्तुकों का स्वागत, अनौपचारिक विचार–विमर्श इत्यादि पुन:आरम्भ कर दी। गुरुदेव ने भोजन की मेज़ पर लंच के बाद लगभग एक घन्टे तक वार्तालाप किया। उन्हें बीमारी के चरम समय पर घटित बहुत सी बातों की याद नहीं थी और जब अभ्यासियों ने उन्हें बताया कि क्या घटित हुआ था तो उसे सुनकर उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया।

एक अनौपचारिक वार्तालाप में गुरुदेव ईर्ष्या के विषय में बात कर रहे थे। गुरुदेव ने कहा कि बहुत से व्यक्ति उनसे व उनकी बाबूजी महाराज से निकटता से ईर्ष्या करते थे। इस पर एक भाई ने पूछा कि क्या ईर्ष्या ठीक थी।

गुरुदेव ने कहा कि मैंने बाबूजी महाराज से इस सवाल को पूछा तो उनका जवाब था कि किसी के प्रति बैर भाव या इर्ष्या रखना हानिकारक है। बाबूजी ने कहा कि इर्ष्या जैसा पाप कोई नहीं है और इर्ष्या रखने वाले

व्यक्ति को किसी भी तरह का परामर्श देने का कोई लाभ नहीं है। इर्ष्या का वास्तविक अर्थ यह है कि आप मालिक की आपको वह कुछ देने की, जो वे किसी और को दे चुके हैं, क्षमता पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं।

डाक्टर इचाक अडिज़ेस का दौरा

भाई इचाक अडिज़ेस १४ से १६ दिसंबर तक तीन दिन चलने वाले जी.एस.टी कार्यक्रम का संचालन करने के लिए आए थे। एक दिन उन्होनें गुरुदेव से मानव जाति के भविष्य के बारे में पूछा तो गुरुदेव ने कहा कि वह अच्छा है। फ़िर भाई इचाक ने इस सम्बन्ध में परमाणु संकट और विनाश इत्यादि का हवाला दिया तो गुरुदेव का जवाब था कि इसको विनाश की तरह नहीं लेना चाहिए बल्कि इसको आगे बढनें के लिए जैसे रुकावटों को दूर किया जाता है वैसे लेना चाहिए। उसके बाद चर्चा का विषय बदलकर ईश्वर, मालिक और किसपर भरोसा किया जाए जैसे विषयों पर केन्द्रित हो गया। गुरुदेव ने कहा कि मैं अपने गुरुदेव बाबूजी महाराज पर भरोसा करता हूं न कि ईश्वर पर क्योंकि सहज मार्ग के अनुसार ईश्वर के पास मन नहीं है और सृष्टि के निर्माण के पश्चात ईश्वर की भूमिका समाप्त हो गई। उसके पश्चात गुरुदेव ने कहा कि वे सत्ताएं जो नियति का मार्गदर्शन करती हैं वे अपने आप से कार्य नहीं कर सकती और उनको पृथ्वी पर अपना कार्य करने के लिए मालिक की भांति एक माध्यम कि आवश्यकता होती है। भाई इचाक ने पूछा कि प्रेम में भय क्यों होता है। गुरुदेव ने उत्तर दिया, "इसका केवल एक ही कारण है कि हम दे नहीं सकते। दीजिए और देते रहिए और भय चला जाएगा।" उन्होंने कहा हम जितना अधिक देंगे उतना अधिक हम भय मुक्त होंगे। उन्होनें आगे कहा, "दीजिए और आपको और अधिक मिलेगा जिससे कि आप और अधिक दे सकें"। इस बारे में मैं आपको आश्वस्त करता हूं।

रविवार १६ दिसंबर को गुरुदेव झारखंड के अभ्यासियों से मिले जो उनके घर पर उनसे मिलने का इंतजार कर रहे थे। उसके बाद उन्होनें आश्रम में सत्संग कराया और कार्यकर्ताओं के लिए डाक्टर इचाक द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भी शामिल हुए। प्रशिक्षकों के कार्य के बारे में उन्होनें कहा कि वो भाग्यशाली हैं क्योंकि वे उन अभ्यासियों की आध्यात्मिक यात्रा का निरीक्षण करते हैं जिनकी जिम्मेदारी उन्हें सौपी गई है। पूज्य मालिक ने कहा "प्रशिक्षकों को अभ्यासियों के कल्याण के लिए नरक में भी जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

रविवार २३ दिसंबर को गुरुदेव ने गायत्री में ८ शादियां संपन्न कराई। क्रिसमस के दिन उन्होनें आश्रम में सत्संग कराकर अभ्यासियों को चकित कर दिया। सत्संग के बाद उन्होनें कॉटेज के पुर्ननिर्माण कार्य का निरिक्षण किया एवं उसके बाद आडिटोरियम ब्लाक में चले गए। उन्होनें ईसाई पृष्ठभूमि वाले विदेशी एवं भारतीय अभ्यासियों को आमन्त्रित किया और उन्हें उपहार दिए।

शनिवार २९ दिसंबर को लगातार वर्षा हो रही थी किन्तु खराब मौसम के बावजूद गुरुदेव आश्रम आए तथा एक घन्टे का सत्संग कराकर तुरन्त गायत्री के लिए रवाना हो गए। शाम को गायत्री में सत्संग के बाद उन्होनें कुछ अभ्यासियों से उपहार स्वीकार किए। बहन अल्ला और भाई इगोर दुनिया के दूसरे सबसे बडे पेड़ "सिकोया' जो कि कैलिफ़ोर्निया में है का एक बहुत बडा चित्र लाए थे। वे गुरुदेव को बता रहे थे कि यह पेड़ जैसे–जैसे पुराना हो रहा है वैसे–वैसे और अधिक मज़बूत होता जा रहा है और उन्होनें गुरुदेव के लिए भी कामना की कि वे भी उस पेड़ की तरह मज़बूत होते जाएं। उन्होनें गुरुदेव को सर्दी में पहनने वाले वस्त्र यह कहकर भेंट किए कि चूंकि गुरुदेव दिन प्रतिदिन मजबूत होते जा रहे हैं इसलिए मालिक को अपनी रुस और सतकोल की यात्रा के दौरान इन कपड़ों की आवश्यक्ता होगी। इस पर गुरुदेव हंसे और उनके लाए हुए उपहारों को शीष्टतापूर्वक स्वीकार किया।

३१ दिसंबर की रात को सोने से पहले एक अभ्यासी ने गुरुदेव से कहा,"गुरुदेव हमारे लिए इस वर्ष का सबसे बड़ा उपहार यह है कि आप अपनी गम्भीर बीमारी से स्वस्थ होकर हमारे पास वापस आ गए हैं" और गुरुदेव ने कहा, "मेरे लिए सबसे बडा उपहार यह है कि आप सब मेरे साथ हैं।"यह बड़ा भावुक क्षण था और इसके बाद थोड़ी देर के लिए खामोशी छा गई। गुरुदेव ने सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं और सोने के लिए चले गए।

मणपाक्कम में सेमीनार

१६ से २१ अक्टूबर २०१२

इस दौरान हुए सेमीनार में गोरखपुर के लगभग २५० एवं पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ के केन्द्रों से आए हुए करीब ४०० अभ्यासी उपस्थित थे।

२३ से २८ अक्टूबर २०१२

नोयडा एवं कुछ अन्य केन्द्रों जैसे फ़ैजाबाद, फ़रीदाबाद, अलीगढ़, रामपुर और चिकली आदि कुछ अन्य केन्द्रों से आए हुए लगभग २०० अभ्यासियों ने भाग लिया। करीब ५०० अभ्यासियों ने विभिन्न सत्संगों, सामूहिक चर्चाओं, सभाओं एवं बैठकों में भाग लिया।

३० अकटूबर से ४ नवम्बर २०१२

बैंगलोर से करीब १३०० अभ्यासी सेमीनार में भाग लेने आए थे। भाई कमलेश पटेल ने पहले दिन वार्ता दी एवं अन्य दिनों में वार्ताओं के साथ–साथ शाम को डी.वी.डी दिखाई गयी। प्रशिक्षकों के लिए विशेष सत्र का आयोजन कि

६ से ११ नवम्बर २०१२

वरुधुनगर, अलुवा एवं अन्य उपकेन्द्रों के अभ्यासियों के साथ–साथ नागपुर और बरेली के अभ्यासी भी सेमीनार के लिए आए थे। नागपुर केन्द्र से आए हुए बच्चों ने आश्रम को जीवंत बना दिया। इस सप्ताह लगभग ५०० अभ्यासी आए।

१२ से १८ नवम्बर २०१२

दिवाली के इस सप्ताह में गुजरात से करीब १२०० अभ्यासी सेमिनार में भाग लेने आए। गुरुदेव का स्वास्थ्य पहले से बेहतर था और वे मंगलवार और बुधवार को आश्रम में आए, उन्होंने सत्संग कराया तथा अभ्यासियों एवं बच्चों से मिले। सभी को उनकी उपस्थिति का सुखद अनुभव हुआ।

२० से २५ नवम्बर २०१२

आन्ध्रपदेश के विभिन्न केन्द्रों जिला करीमनगर, तिरुपति, गोदावरीखानी (पेड्डापल्लि, जम्मिकुन्टा, मन्चेरियल, जयपुरम्, श्रीरामपुर, मन्दामर्रि, बेलम्पल्लि, गोलेटी, असिफ़ाबाद, सिरपुर, आदि), बेल्लारि, कम्प्लीकोट्टल, गंगावती से आए हुए करीब ७०० अभ्यासियों ने सेमीनार में भाग लिया।

२७ नवम्बर से २ दिसंबर २०१२

करीब १५० अभ्यासी सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया, फिलिपिन्स, थाईलैंड एवं जापान से आए थे। गुरुदेव ने इस सेमीनार की कार्यवाही में विशेष रुचि ली तथा कार्यक्रम प्रभावी ढंग से हुआ। गुरुदेव ने सभी प्रशिक्षकों को भाई माधव के घर बुलाया और एक लंबी वार्ता के बाद सत्संग कराया। एक भव्य समापन के लिएगुरुदेव रविवार को अपनी गोल्फ़ कार्ट में आश्रम आए और सुबह का सत्संग कराया।

४ से ९ दिसंबर २०१२

लगभग ७५० अभ्यासियों का एक दूसरा बड़ा समूह आगरा एवं पास के अन्य केन्द्रों जैसे रायबरेली, चन्द्रपुर, फ़तेहपुर और एटा से आया। गुरुदेव गायत्री में थे और इस बात पर जोर दे रहे थे कि वे वहाँ पर आराम और स्वास्थ लाभ के लिए रुके हैं। सेमीनार नियमित सत्संगों के साथ जारी रहा तथा भाई कमलेश ने सत्संग एवं बैठकों में सक्रिय रुप से भाग लिया।

११ से १६ दिसंबर २०१२

बिहार एवं झारखंड के अभ्यासी कठिन प्रयासों के बाद बड़ी संख्या में मणपाक्कम पहुँचे और लगभग ७५० अभ्यासी वहाँ आए। गुरुदेव ने गायत्री में अधिक से अधिक अभ्यासियों से मिलने का प्रयत्न किया और १६ दिसंबर रविवार को आश्रम आकर सभी को आश्चर्य चकित कर दिया और सुबह का सत्संग कराया।

मंगलवार १८ से २३ दिसंबर २०१२

आन्ध्रप्रदेश के अमलापुरम्, गुंटूर और कड़प्पा से लगभग ६०० अभ्यासी एवं कर्नाटक के रायचूर से करीब २५ अभ्यासियों ने सेमीनार में भाग लिया। नियमित होने वाले सत्संगों के अलावा अन्य विषयों जैसे पवित्रता, संस्कार, गुरुदेव की भूमिका, धर्म एवं अध्यात्म आदि पर चर्चाएं और प्रशिक्षकों की बैठक हुई। रविवार २३ दिसंबर को भाई कमलेश ने सत्संग कराया और गुरुदेव ने गायत्री में उसी दिन ८ शादियां संपन्न कराई।

२५ से ३० दिसंबर २०१२

इस सप्ताह की मुख्य बात यह थी कि श्रीलंका से आए हुए ४० अभ्यासियों ने २ दिन के तमिल भाषा में 'ग्राउंडिंग इन प्रेक्टिस' सत्र में भाग लिया। क्रिसमस एवं शनिवार की प्रमुख बात गुरुदेव की आश्रम में उपस्थिति थी जब वे दूर से आए हुए अभ्यासियों से मिलने आए। लगभग ८० अभ्यासी जो जम्मू और कश्मीर से आए थे और अधिकतर पहली बार आए थे, उनको गुरुदेव से मिलने का अवसर मिला। इसके अलावा लगभग ९५० अभ्यासी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश से भी आए थे।

युवा पुनरुत्थान

सहज मार्ग में युवाओं की भूमिका, पनवेल आश्रम, मुम्बई

६ अक्टूबर को पनवेल आश्रम में भाई मोहनदास हेगड़े ने लगभग ४० प्रतिभागियों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य गुरुदेव, मिशन एवं पद्धति को समझना, युवाओं को प्रेरित करके उनमें मिशन की गतिविधियों के लिए उत्साह पैदा करना तथा एकीकरण की भावना का विकास करना था।

'साधना की संकल्पना' पर आयोजित एक चर्चा में इस बात पर बल दिया गया कि साधना हेतु हमारी प्रवृति कैसी हो तथा "अध्यात्मिकता से उत्प्रेरित भौतिक जीवन" कैसे जीया जाए। "अभ्यास की संकल्पना" विषय पर चर्चा के दौरान वर्तमान में जीने की मनोवृति पर प्रकाश डाला गया। स्वयं-सेवक के गुणों की विवेचना करते हुए समर्पण, धैर्य, सहनशीलता एवं आज्ञापालन को स्वयं-सेवक के कार्य के लिए लाभकारी पाया गया।

सहज मार्ग युवा संघ, तिरुप्पुर

तिरुप्पुर केन्द्र में युवा नियमित रूप से ध्यान कक्ष में एकत्रित होते हैं तथा स्वयंसेवा कार्य हेतु अपने विचार और दृष्टिकोण बाँटते हैं। गुरुदेव की अनुमति से २९ अक्टूबर २०१२ को "सहज मार्ग युवा संघ" बनाया गया जिसमें खेल-कूद की गतिविधियां भी सम्मलित की गई है। ४ नवम्बर को कानगेयम् में उद्घाटन सेमिनार आयोजित की गया। भाई एन. प्रकाश ने आरंभिक भाषण दिया। भाई एस.एस.रामाकृष्णन, भाई रवि सुब्बियन और बहन ऐजिलारासी ने युवाओं को मिशन की सेवा मालिक की याद में रहते हुए करने को प्रोत्साहित किया। ११ से १३ नवम्बर के दौरान युवा संघ के २५ सदस्य नात्रम्पल्ली आश्रम में आध्यात्मिक मिलन एवं स्वयं-सेवा के कार्य हेतु उपस्थित थे। सफाई की गतिविधि के अलावा उनकी गतिविधियों में पुस्तक पठन, सामूहिक परिचर्चा, प्रश्नोतर सत्र, गुरुदेव की चुनिंदा विषयों पर दी गई डी.वी.डी वार्ताओं को देखने के साथ सत्संग में सम्मिलित होना शामिल था। कार्यक्रम हर्ष और उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

वडोदरा के युवाओं के लिए 'सहनशीलता' पर कार्यशाला

१६ दिसम्बर को बहन ऐलिजाबेथ डेन्ले ने बड़ौदा, आनन्द और नाडियाड के युवाओं से 'सहनशीलता' विषय पर चर्चा की जो कि 'अभ्यास में मजबूती' प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक भाग भी है। बड़ौदा केन्द्र के ५ सहायक और बहन ऐलिजाबेथ ने २ घंटे का कार्यक्रम आयोजित किया जो कि धैर्य एवं सहनशीलता विषय पर केन्द्रित था तथा इसका आरम्भ 'सुनने' और 'बोलने' जैसे विषयों से किया गया।मालिक के भाषणों से इस विषय से संबंधित उद्धरण पढ़े गए। लगभग ६० अभ्यासियों को समूहों में रखा गया तथा प्रत्येक समूह में एक सहायक सभी सदस्यों की सहायता एवं मार्गदर्शन के लिए उपस्थित था।

प्रतिभागियों को फिर जोड़े में रखा गया जहाँ पर उन्होंने अपने उस समय के अनुभव बाँटे जबकि वे दूसरों से सहनशील नहीं रहे तथा जिसमें उनके आपसी सम्बन्ध प्रभावित हुए। एक अभ्यासी ने मूक असहिष्णुता के विचार को प्रस्तुत किया जिसमें असहिष्णुता को मौखिक प्रतिक्रिया के जैसे नकारात्मक हाव-भाव की भाषा से भी व्यक्त किया जाता है। अंत में प्रत्येक प्रतिभागी को एक वृतान्त माला प्रदान की गई जिस पर वे मंथन कर सकें। संपूर्णत: यह सत्र बहुत ही दिलचस्प एवं अनेक प्रतिभागियों के लिए उपयोगी प्रतीत हुआ।

प्रशिक्षकों की बैठकें

एन सी आर– दिल्ली ज़ोनल

२४ नवंबर को दिल्ली में आयोजित बैठक में ८० प्रशिक्षकों ने भाग लिया। भाई कमलेश पटेल ने मणपाक्कम से वीडियो के द्वारा उद्घाटन प्रति सम्बोधन किया। उन्होंने आध्यात्मिक जीवन के कई पहलुओं को छुआ जैसे परिवर्तन के साथ चलना, आंतरिक अवस्था को बनाए रखना, संवेदनशीलता, विनम्रता, समर्पण और सिटिंग देने से पहले स्वयं की अवस्था पढ़ने की क्षमता आदि। ज़ोन प्रभारी डॉ.सत्य मन्डल परिवर्तन स्वीकार करने के महत्व पर बोले। पाँच समूह बनाए गए और प्रत्येक समूह को विचार विमर्श के लिए एक विषय दिया गया। प्रत्येक टीम के प्रमुख अगली बैठक में सम्बन्धित विषय पर कार्य योजना प्रस्तुत करेंगे। दिल्ली के केन्द्र प्रभारी भाई सुधीर मरवाहा ने बुरारी के राष्ट्रीय आश्रम और उसके लिए भूमि अधिग्रहण के बाद की प्रगति की जानकारी दी।

जयपुर, राजस्थान

२१ और २२ अक्टूबर को जयपुर ज़ोनल आश्रम में चरित्र निर्माण, सुधार के लिए उप–ज़ोनल टीमों को बनाना, प्रशिक्षकों की कार्य प्रणाली को पुनः प्रभावी बनाना, युवाओं के प्रशिक्षण और नए प्रशिक्षकों के चयन के लिए चयन पद्धति की रचना इत्यादि विषयों पर केन्द्रित प्रशिक्षकों की एक बैठक हुई। प्रतिभागियों को भौगोलिक आधार पर चार उप–ज़ोनों में बांटा गया और इस के लिए समन्वयक नामांकित किए गए। समन्वयकों ने चर्चा के बाद कार्य योजना प्रस्तुत की। दूसरे दिन संभावित प्रशिक्षकों को चुनने और उन्हें प्रशिक्षण देने की आवश्यकता को समझाया गया। सभी प्रतिभागी सन्तुष्ट थे और सत्र के बाद ताज़ा महसूस कर रहे थे।

कर्नाटक

कर्नाटक दक्षिण ज़ोन के प्रशिक्षकों का भ्रमण सप्ताह ८ और ९ दिसम्बर को आयोजित हुआ। २७ प्रशिक्षकों द्वारा कुल चौबीस केन्द्रों का भ्रमण किया गया। इस दौरान चौबीस गृह–सभाएं, १७ केन्द्रों पर दिनभर का कार्यक्रम और ६ केन्द्रों पर आधे दिन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम का विषय 'मिशन के साहित्य को पढ़ने का महत्व' था। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ व्यक्तिगत सिटिंग से हुआ जिसके बाद शाम को एक गृह–सभा हुयी जिसमें साधना की मूल बातों को शामिल किया गया। रविवार का कार्यक्रम सत्संग से प्रारम्भ हुआ और भाई कमलेश पटेल द्वारा बताई गई नौ किताबों को पढ़ने के महत्व विषय पर परिचर्चा हुई।

प्रशिक्षकों की उत्तरी कर्नाटक यात्रा

७ और ८ दिसम्बर को बैंगलोर से आए प्रशिक्षक भाई एन.एस. नागराज, भाई बी.जी. प्रसन्न कृष्णा, भाई गिरीष टोटलूर और उनके साथ प्रकाशन के स्वयंसेवकों ने उत्तरी कर्नाटक के विभिन्न केन्द्रों का दौरा किया, सत्संग करवाए और वार्ताएं दीं। ज़ोन प्रभारी भाई राजू काशमपुरकर एवं स्थानीय प्रशिक्षकों ने भी उनके साथ सेदम, शोरापुर, यादगीर, गोगी, हमनाबाद, भालकी और बीदर केन्द्रों की यात्रा की जहाँ ८ दिसंबर को दिन भर का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

९ दिसंबर रविवार को गतिविधियों के आयोजन का स्थल गुलबर्गा आश्रम था जहां २७० अभ्यासी और उत्तरी कर्नाटक के सभी प्रशिक्षक एकत्रित हुए। 'दिल से सेवा कार्य करो' विषय पर वार्ताएं हुईं और इसी विषय पर पैनल द्वारा चर्चा हुई जिस के बाद प्रशिक्षकों की बैठक और प्रश्न–उत्तर का सत्र हुआ। शाम को एक ओपन हाउस में भाई नागाराज, प्रसन्ना और राजू ने सभा को सम्बोधित किया। इस अवसर पर तीस में से दस अतिथियों ने बाद में अभ्यास प्रारम्भ किया।

संयुक्त सचिव की असम यात्रा

भारतीय तेल निगम के असम तेल प्रभाग के निमंत्रण पर संयुक्त सचिव भाई ए.पी. दुरई ३१ अक्तूबर को 'सतर्कता जागरुकता सप्ताह २०१२' में भाग लेने के लिए डिगबोई पहुँचे। चूंकि बुधवार था, उन्होंने लगभग ४० स्थानीय अभ्यासियों के साथ एक घंटे लंबा सत्र किया जिसमें उन्हें सहज मार्ग अभ्यास के विभिन्न आयामों पर वार्ता के लिए कहा गया। वही कार्यक्रम भाई दुरई के तिनसुकिया आश्रम से वापसी पर उसके बाद के रविवार ४ नवंबर को सत्संग के बाद पुनः २ घंटे किया गया। अभ्यासियों ने कार्यक्रम के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त की और प्रशिक्षकों ने भविष्य में इस तरह के परिचर्चात्मक सत्र को आयोजित करने का प्रण किया।

१ नवंबर को भाई सुनंद पांडे, मुख्य सतर्कता प्रबंधक,आई ओ सी, डिगबोई और केन्द्र के प्रशिक्षक ने स्थानीय उच्च विद्यालयों में एक वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया। लगभग ४० विद्यार्थी – 'उपस्थित व्यक्तियों का विचार था कि विद्यार्थियों के जीवन को आकाँक्षाओं के स्थान पर मूल्य प्रणाली से भरा जाए' – इस विषय पर बोले। वाद–विवाद प्रतियोगिता की गुणवत्ता उत्कृष्ट थी और अंत में भाई दुरई ने गुरुदेव की महत्वाकांक्षाओं और आकांक्षाओं के विषय में शिक्षाओं को प्रस्तुत किया। अगले दिन उन्होंने 'सतर्कता जागरुकता सप्ताह' के कर्मचारियों और उनके परिवारजनों द्वारा शामिल हुए विदाई समारोह में भाग लिया। पुरुस्कार वितरण के पश्चात उन्होंने ध्यान के माध्यम से आंतरिक सतर्कता विकसित करने की आवश्यकता पर बात की।

३ नवंबर की सुबह मेहमानों के एक छोटे समूह के लिए एक ध्यान कार्यशाला आयोजित की गई। डिगबोई और आस पास के केन्द्रों जैसे कि तिनसुकिया, डूम डूमा, मारघेरिटा और सिबसागर से लगभग ६० अभ्यासी वहाँ उपस्थित थे। इस अवसर पर ज़ोनल केन्द्र प्रभारी भाई

धानी चन्द भी उपस्थित थे। कुछ अभ्यासियों को सहज मार्ग के संबंध में बोलने का निवेदन किया गया और भाई दुरई द्वारा विस्तृत रुप से सत्र का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। सात अभ्यासियों ने आरम्भिक सिटिंग शुरु की।

शाम के समय अधिकारी क्लब, डिगबोई की ओर से 'ध्यान के माध्यम से स्व विकास' इस विषय पर एक वार्ता का आयोजन किया गया जिसमें क्लब के ५० अधिकारी और उनकी पत्नियां उपस्थित थीं। एक योग्य गुरु के मार्ग दर्शन में ध्यान के द्वारा अपने अंदर जुड़ना विषय पर भाई दुरई द्वारा दी गई वार्ता को सभी के द्वारा सराहा गया। आध्यात्मिकता का यह संदेश सभी के दिलों को छूता हुआ नज़र आ रहा था।

ए एम सी अभिविन्यास कार्यक्रम: उत्तर आंध्र प्रदेश

आश्रम रखरखाव समिति के ११५ सदस्यों और अभ्यासियों के लिए २१ से २३ सितंबर २०१२ तक उत्तर आंध्र प्रदेश ज़ोन के तुमकुण्ठा (ज़ोनल) आश्रम में एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की रूप रेखा इस प्रकार थी:

- ए एम सी सदस्यों को ए एम सी की के कार्यों, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों, जो भी उनके केन्द्र/आश्रम के लिए लागू हों, के बारे में अवगत कराना।
- ए एम सी की बैठकों के कार्यक्रम एवं उनके आयोजन की नियमित रिपोर्ट की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया।
- हमेशा दस्तावेजों के साथ 'संवाद के लिए दिशानिर्देश' वाली मानसिकता के साथ ए एम सी बैठकों का आयोजन हो।

अनुभवी वक्ताओं द्वारा भूमिका तथा जिम्मेदारियाँ, आश्रम का उपयोग, वित्तीय निति योजना, स्वागत डेस्क, रखरखाव, बाल केन्द्र, आश्रम की देख भाल करने वाला एवं स्वयंसेवक जैसे विषयों को समाहित किया गया। इस बात पर सहमति जताई गई कि ए एम सी मार्ग–दर्शिका का तेलगु में अनुवाद हो। भाई श्रीराम जो मुख्यालय से थे ने वित्तीय सम्बन्धी नीति पर एक प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन किया।

गुरुदेव के संदेशों के अनुसार कार्यक्रम के लिए आध्यात्मिक पक्ष– विचार, कर्म और वचन – पर ज़ोर दिया गया। कार्यक्रम के लिए दिशानिर्देश थे कि शुद्ध विचार सुखद वचन और कार्यवाही की ओर ले जाते हैं। इस बात पर भी बल दिया गया कि आश्रम के वातावरण को संरक्षित रखा जाए।

गोवा में एस एम एफ़ आश्रम का उद्घाटन

२६ दिसंबर को गुरुदेव ने गोवा आश्रम का वीडियो के द्वारा उद्घाटन किया तो गोवा का पश्चिमी घाट भारत में मिशन के मानचित्र पर आ गया। मुंबई केन्द्र के भाई के डी कोसांबे ने संकोअले गाँव (डबोलिम हवाई अड्डे से लगभग ८ कि. मी.दूर) में लगभग २.५ एकड़ ज़मीन के साथ ८० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता वाला एक ध्यान कक्ष उपहार स्वरूप भेंट किया। उद्घाटन के समय भाई कोसांबे के बड़े पुत्र वीराज, भाई पी.आर. कृष्णा, भाई सुधीर मरवाहा और आदित्य आर्या वहां उपस्थित थे। गुरुदेव ने कहा, "बाबू जी अक्सर मुझे कहा करते थे कि प्रत्येक घर एक आश्रम होना चाहिए। आश्रम को हमारे आन्तरिक स्व को प्रतिबिंबित करना चाहिए।"

प्रातः ९:०० बजे का सत्संग भाई पी. आर. कृष्णा द्वारा करवाया गया जिसमें लगभग ८५ अभ्यासी उपस्थित थे। गोवा आश्रम विकास एवं समन्वय समिति ध्यान कक्ष और इसके आस पास के विकास के लिए अब पूर्णतया अभिप्रेरित है।

सरलीकरण प्रदर्शन, लखनऊ

एक सहायकशिक्षक प्रदर्शन कार्यक्रम और हिन्दी में जीआईटीपी ७ से ९ दिसंबर तक लखनऊ आश्रम में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में चार ज़ोन(यू पी.–पूर्व, यू पी.–मध्य, यू पी.–पश्चिम और उत्तराखण्ड) से ६५ प्रतिभागियों ने सात अनुशिक्षकों– बहनें छवि सिसोदिया, पूनम बब्बर, नंदिता माथुर और विमला श्योरान और भाई नीरज लवानिया, जिग्नेश सेलट और ओम प्रकाश केज़रीवाल सहित भाग लिया।

दो लघु नाटिकाएं ७ तारीख के सत्संग के पश्चात अनुशिक्षकों द्वारा प्रस्तुत की गई। स्वयं के प्रति स्वीकार्यता और संबंधों में भाईचारे पर अनेक सत्र आयोजित किए गए। रात्रि भोजन के पश्चात अलग–अलग समूहों में से कुछ प्रतिभागियों को अगले दिन के पाठ्यक्रम के लिए सहयोगी नियुक्त किया गया।

८ दिसंबर को 'ध्यान' सत्र का उद्देश्य प्रतिभागियों में आंतरिक अभिव्यक्ति और अवलोकन के माध्यम से अभ्यास के प्रति जागरुकता लाना और ध्यान के तरीके को स्पष्ट करना था। इसमें बताया गया कि भावी अभ्यासियों में स्पष्ट और साधारण तरीके से ध्यान की व्याख्या कैसे करनी है।

९ दिसंबर को 'सफाई' सत्र का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य था प्रतिभागियों के लिए सफाई के महत्त्व को समझना, विधि में विचलन की पहचान करना और उसे ठीक करना ताकि वे भावी अभ्यासियों को भी सफाई की व्याख्या करने में भी सक्षम हों।

नए प्रकाशन

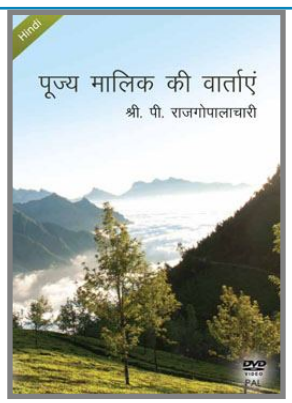

पूज्य मालिक की वार्ताएं
हिन्दी डी वी डी

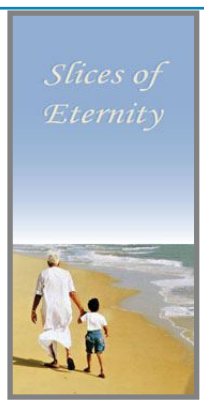

स्लाईसिस ऑफ ईटर्निटी
अंग्रेजी–फॅनफोल्ड बुकलॅट

टेल्स ऑफ वन्डर खंड–३
अंग्रेजी– बच्चों की किताब

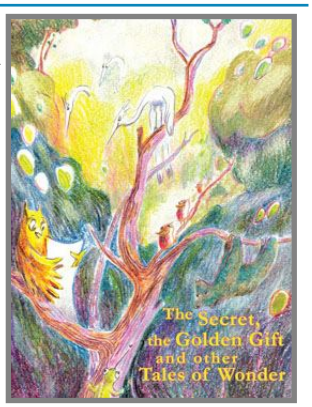

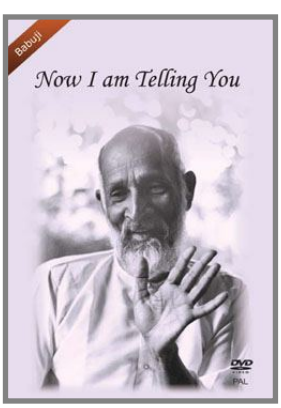

नाउ आइ एम टैलिंग यू
अंग्रेजी– डी वी डी

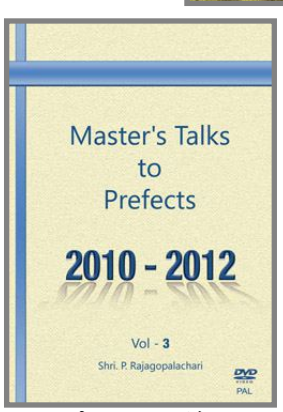

मास्टर्स टॉक्स टू प्रीफेक्ट्स
खंड–३(२०१०–२०१२)

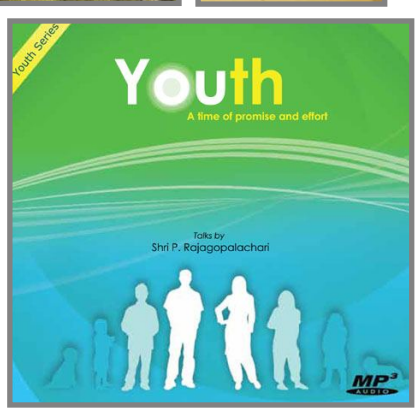

यूथ–ए टाईम ऑफ प्रॉमिस एन्ड एफर्ट
अंग्रेजी– एम पी ३

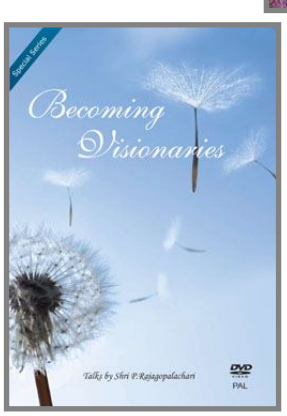

बीकमिंग विजनरीज़
अंग्रेजी– डी वी डी

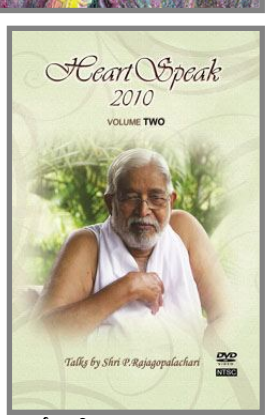

हार्ट स्पीक–२०१० खंड–२
अंग्रेजी– डी वी डी

प्रकाशन विभाग के स्वंय सेवकों के लिए कार्यशाला

गुलबर्गा, उत्तर कर्नाटक

७ एवं ८ दिसम्बर २०१२ को गुलबर्गा आश्रम में प्रकाशन विभाग के स्वंय सेवकों के लिए २ दिन की कार्यशाला बैंगलोर के भाई वेंकट राव एवं उनके समूह द्वारा आयोजित की गई। इसमें मुम्बई, उत्तर कर्नाटक और हैदराबाद के ५० स्वंय सेवकों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रकाशन से संबन्धित स्वंय सेवकों की संख्या बढ़ाना, गुरुदेव के संदेशों को पुस्तकों, ऑडियो–वीडियो और चित्रों के माध्यम से संचारित करना तथा अभ्यासियों में मिशन का साहित्य पढ़ने की आदत डालना था। प्रशिक्षण प्रेरित करने वाली वार्ताओं, समूह वार्तालापों, खेलों के अभ्यास, बिक्री की गतिविधियों का अभ्यास, बिक्री की दुकाने लगाने तथा हिसाब–किताब करने और फिर सभी पुस्तकों को इकठ्ठा करने के माध्यम से दिया गया। यह २ दिन का बहुत ही गहन सत्र था जिससे सभी स्वंय सेवक बहुत लाभान्वित हुए।

तेलगु में अनुवाद का प्रशिक्षण

गुरुदेव के कार्यों का अंग्रेजी से क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए सिर्फ़ दोनों भाषाओं पर पकड़ ही पर्याप्त नहीं है बल्कि इसके लिए सहज मार्ग की शिक्षाओं की गहरी समझ भी जरुरी है। थुमकुन्टा के क्षेत्रीय आश्रम में १४ से १६ सितम्बर के बीच ५० अभ्यासियों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जो आंध्र–प्रदेश, बैंगलोर और दिल्ली के विभिन्न भागों से आए थे। इसका उद्देश्य स्थायी गुणवत्ता वाले अनुवाद प्राप्त करना था जोकि विषय के मुख्य भाव से जुड़े हों। 'भाव समझना, सरल, प्रवाह और उत्साह' विषय का मतलब है, 'भाव का अनुवाद करो, भाषा सरल रखो, प्रवाह सुनिश्चित करो और इसे उत्साह के साथ करो।'

दो दिन के दौरान भाई अनंत, कामेश्वर और कृष्ण राव ने कार्यक्रम का आयोजन किया। एक शुरुआती सत्र, अनुवाद की वर्तमान पद्धति पर प्रस्तुति तथा अनुवादकों के लिए निर्देश, अनुवाद के सॉफ्टवेयर का प्रयोग और अनुवाद करने का अभ्यास इस सत्र के मुख्य आकर्षण रहे।

ग्राउंडिंग इन दी प्रॅक्टिस

अहमदाबाद और जयपुर में ३ दिन के लिए नवीन रचित कार्यक्रम ग्राउंडिंग इन दी प्रॅक्टिस (GITP) का आयोजन किया गया जबकि उडुपी केन्द्र ने एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया।

१२ से १४ अक्टूबर के बीच अहमदाबाद में एक कार्यक्रम में गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और मुम्बई के कुल १६३ अभ्यासी सम्मिलित हुए। यह ३० आयोजकों द्वारा ३५ स्वंय सेवकों के सहयोग से संचालित किया गया। मिशन के साहित्य और गुरुदेव की ऑडियो–वीडियो की वार्ताओं की सहायता से इस प्रशिक्षण की प्रक्रिया अत्यन्त स्वाभाविक हो गई। १५ साल से अधिक समय से अभ्यास कर रहे अभ्यासियों ने भी यह महसूस किया किया कि इस कार्यक्रम ने उनकी सहज मार्ग साधना के बारे में सोच को पूरी तरह से बदल दिया है और अंत में हर एक ने जाना कि असली मायने में सहज मार्ग का अभ्यासी बनने के लिए क्या करना है।

जयपुर ज़ोनल आश्रम में ३ दिन का कार्यक्रम २४ से २६ नवम्बर के बीच किया गया जिसमें ७० सहभागियों और ६ संचालकों ने भाग लिया। विभिन्न सत्रों और वीडियो प्रस्तुति के दौरान सभी तल्लीन हो गए। उन्होंने पाया कि उनके हृदय वास्तव में खुल रहे थे। प्रतिभागियों ने इस सत्र और इसे संचालित करने के तरीके की सराहना की। इस ज़ोनल आश्रम पर उपलब्ध कराई गयी मूलभूत सुविधाओं में स्वंयसेवकों के प्रेम एवं उनकी कड़ी मेहनत को महसूस किया जा सकता था।

उडपी के पास पेरमपाल्ली आश्रम में १६ दिसंबर को 'डायरी लेखन' विषय पर सत्र संचालित किया गया। वहाँ पर १३ प्रतिभागी और २ संचालक थे। परिचर्चा मेंडायरी लेखन के कई पहलू शामिल किए गए जैसे कि आध्यात्मिक उन्नति और चरित्र निर्माण का साधन डायरी बन सकती है । ऑडियो-वीडियो की झलकें तथा डायरी लेखन के बारे में गुरुदेव के कथनों पर प्रस्तुति दिखाई गयी। कार्यक्रम हिन्दी और कन्नड़ में संचालित किया गया। भाग ले रहे अभ्यासियों ने 'ध्यान' विषय पर आधारित अगले कार्यक्रम में और अधिक अभ्यासियों को प्रेरित करने का वायदा किया। कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों की राय बहुत ही उत्साहवर्धक थी।

आश्रमों में कार्यक्रम

रविवार के पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम पुराने तथा नए अभ्यासियों को एक साथ लाने के उद्देश्य से आयोजित किए जाते हैं। सामूहिक चर्चा तथा प्रश्न–उत्तर के सत्र अभ्यासियों के साधना से सम्बन्धित संदेहों को दूर करते हैं। ऐसे कार्यक्रम अभ्यासियों को साधना में नियमित होने तथा अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। निम्नलिखित विवरण विभिन्न केन्द्रों द्वारा आयोजित पूरे दिन तथा आधे दिन के कार्यक्रमों पर आधारित हैं।

तमिलनाडु के अविनाशी केन्द्र में २ अक्टूबर को आधे दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें ५५ अभ्यासियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में आध्यात्मिकता के लिए जागृति लाने तथा नए अभिलाषियों को सहज मार्ग के विषय में समझाने से सम्बन्धित वार्ताएँ थीं। कार्यक्रम के विषयों में सहज मार्ग साधना के मूल तत्वों को शामिल किया गया। प्रतिभागियों को जहाँ तक सम्भव हो मौन बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया जिससे वे अपने अन्दर की आवाज़ सुन सकें।

केरल के पायान्नूर केन्द्र में २३ अक्टूबर को प्रतिभागियों ने "व्हिस्पर्स फ्रॉम द ब्राइटर वर्ल्ड" से उद्धरण प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में उत्तरी मालाबार ज़ोन के सात केन्द्रों के २०० प्रतिभागी उपस्थित थे।

४ नवम्बर को राजस्थान के भीलवाड़ा केन्द्र के युवाओं ने एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का विषय था 'गुरु'। अनुभव बाँटने के सत्र हुए तथा एक नाटक भी प्रस्तुत किया गया। पूज्य गुरुदेव की 'सहज मार्ग टुवर्ड्स इनफ़िनिटी' नामक डीवीडी भी दिखाई गई। युवाओं द्वारा किए गए प्रयासों को सभी प्रतिभागियों ने सराहा।

१८ नवम्बर को अलुवा केन्द्र (केरल) में एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें २०० अभ्यासियों ने भाग लिया। सत्संग के अलावा गुरुदेव की वार्ता की वीडियो झलक, पारस्परिक वार्तालाप सत्र, गीत तथा कविता गायन कार्यक्रम के मुख्य अंग थे। दिव्यता तथा ९ बजे की सार्वभौमिक प्रार्थना विषयों पर स्पष्टीकरण भी दिए गए।

२ दिसम्बर को आन्ध्र–प्रदेश के तिरुपति केन्द्र में १३० अभ्यासियों के लिए एक अलग प्रकार का पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभ्यासियों ने एक प्रश्नावली के उत्तर दिए जिसमें बहुविकल्पीय प्रश्न थे तथा साथ ही उत्तर का मूल्यांकन दिया गया था। इसमें सहज मार्ग, दूसरों के प्रति अभ्यासी का व्यवहार, स्वयंसेवा, तथा आश्रम जैसे विषयों पर आधारित प्रश्न थे। इस गतिविधि द्वारा प्रतिभागियों को अपने व्यवहार को समझने तथा सुधारने में सहायता मिली।

दक्षिण तमिलनाडु में शिक्षकों के लिए सहज मार्ग का प्रस्तुतिकरण (२०१२)

दक्षिण तमिलनाडु में २३ नवम्बर से १ दिसम्बर के बीच भाई ए. पी. दुरई, संयुक्त सचिव ने विभिन्न जन–सभाएँ आयोजित कीं। पहले तीन दिन के कार्यक्रम तंजावुर, अरियालुर, तिरुवरूर, और पुडुकोटै में हुए। अगले ६ दिन के कार्यक्रम तिरुनेलवेलि तथा कन्याकुमारी जिलों में हुए।

इन जन सभाओं का केन्द्र शिक्षक थे। लगभग ७५० शिक्षकों ने १७ विद्यालयों में इन कार्यक्रमों में भाग लिया। इनमें से लगभग २०० शिक्षकों ने ध्यान शुरु करने की इच्छा व्यक्त की। उन्हें अभ्यास शुरु करने से पहले अपने आप को तैयार करने केलिए आरम्भिक पुस्तिकाएँ दी गईं।

ऐसा देखा गया कि विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों/मुख्याध्यापकों को इस आयोजन से सम्बन्धित पूरी जानकारी पहले से नहीं दी गई थी। इस बात को ध्यान में रखते हुए यह तय किया गया कि भविष्य में जन सभा का आयोजन करने की अनुमति लेते समय सम्बंधित व्यक्तियों को एक पत्र के साथ पठन सामग्री भी दी जाए।

भाई दुरई ने गुरुदेव को बताया कि ऐसा लगता है कि कुछ दशकों पहले के मुकाबले अब लोग सहज मार्ग का सन्देश प्राप्त करने के लिए तैयार हैं। गुरुदेव ने कहा, "इसीलिए बाबूजी महाराज कहते आए हैं कि लोगों के हृदय खुल रहे हैं"।

इस तरह की जन सभाओं की श्रंखलाओं का आयोजन करने से सभी प्रशिक्षकों तथा अभ्यासियों को भी प्रशिक्षण मिला। प्रशिक्षक भाई नल्लायीराम (वल्लीऊर), अनबालागन (तिरुनेलवेलि), डॉ.नाथन (नागरकोइल), कृष्णराजन (वडकनकुलम) और बहन डॉ.राजलक्ष्मी (तिरुनेलवेलि) को स्वयं सेवकों ने बहुत सहयोग दिया। तंजावुर और आस पास के केन्द्रों में ज़ोन प्रभारी भाई बी.एस.मुरुगन ने स्थानीय प्रशिक्षकों भाई सुब्रमण्यन, भाई पोय्यमोड़ी और बहन कामाक्षी की सहायता से कार्यक्रम आयोजित किए। इन गतिविधियों के दौरान गुरुदेव की उपस्थिति चारों ओर व्याप्त थी तथा ऐसा लगा कि वे विभिन्न संस्थाओं में इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करने के लिए वे द्वार खोल रहे हैं।

आनंद आश्रम, गुजरात

प्रकाश का केन्द्र

"तो, मालिक का उपयोग उस सूचकांक की तरह करना चाहिए जो हमें बनना है और आपको अपने अंदर झाँकना है और देखना है कि सहज मार्ग आपके लिए क्या कर रहा है। तब हम अपने मार्ग पर अग्रसर होंगे, हम अन्य सभी चीजों को अनदेखा करते हुए शांतिपूर्वक आगे बढ़ेंगे। मुझे लक्ष्य पाना है; लक्ष्य मेरे सम्मुख है। यह मुझे बताता है कि मुझे क्या बनना है। स्वयं को देखने पर, मैं देखता हूं कि मुझे स्वयं से और क्या विच्छिन्न करना है या जोड़ना है या घटाना है। ये एक सरल सुचारु और सुविधाजनक यात्रा बन जाती है जहाँ अतिशीघ्र ही लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।"

आनंद, गुजरात में २९ जनवरी,२००४ को गुरुदेव की वार्ता

गुजरात के आनंद शहर में आश्रम का नाम गुरुदेव ने 'आनंदाश्रम' दिया गया है क्योंकि यहाँ आपको बहुत आनंद मिलता है। आनंद ज़िला मुख्यालय है जो अहमदाबाद और वड़ोदरा के बीच स्थित है और भारत में 'श्वेत क्रान्ति' के लिए अग्रणीय रहे अमूल डेअरी, आई.आर.एम.ए और एन.डी.डी.बी के लिए प्रसिद्ध है।

आनंद केन्द्र '८०वें दशक और '९०वें के शुरुआती वर्षों में और १९९२–९३ में गुरुदेव की लगातार यात्राओं के कारण सुविकसित हुआ जब गुरुदेव की पत्नी सुलोचना मामी अपने उपचार के दौरान कुछ महीनों के लिए आनंद में रहीं थीं। गुरुदेव नें आई.आर.एम.ए, नेशनल डेअरी डेवलपमेंट बोर्ड और पशु चिकित्सा कॉलेज में वार्ताएं भी दी थीं।

१९९५ में गुरुदेव ने भाई पी.एस.भार्गव को उनके आवासीय भूखंड के एक हिस्से पर शेड बनाकर एस.आर.सी.एम. के ध्यान कक्ष के रूप में उपयोग करने की अनुमति दी थी। गुरुदेव ने इसका नामकरण 'दी मंडपम' किया। १९९६ में बहन अंजना नागर ने आश्रम बनाने के लिए आनंद से करीब ५ किलोमीटर दूर हडगुड गाँव में भूखंड का एक छोटा टुकड़ा भेंट करने की पेशकश की। जनवरी १९९७ में गुरुदेव ने आश्रम की साइट का दौरा किया और कॉलोनी जहाँ भूखंड स्थित था का नाम श्री रामचन्द्रपुरम रखा। १५० अभ्यासियों की क्षमता वाली नई संरचना का उद्घाटन ५ सितम्बर २००० को उस समय के जोन प्रभारी भाई मधुकर कोचर द्वारा गुरुदेव की आज्ञा से किया गया। आनंद, वडोदरा, वनकबोरी और नाडिआद के करीब १६५ अभ्यासी समारोह में सम्मिलित हुए।

३०जनवरी २००४ में गुरुदेव आनंद आए। उस समय तक वहाँ खाली ज़मीन पर एक बाहरी बरामदा और बगीचा भी विकसित कर दिया गया था क्योंकि उस समय तक वहाँ एक जलस्त्रोत मिल गया था। सत्संग के बाद गुरुदेव ने आश्रम के सामने एक कदंब का पौधा रोपा था। आज यह पेड़ करीब ४० फ़ुट ऊँचा है और अन्य झाड़ियों और पेड़ों के बीच आश्रम को एक अनूठा आकर्षण प्रदान करता है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.